

संत कबीर दास के साहित्य की सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका

Sandeep Prajapati^{1*}, Dr. Rajesh Kumar Niranjana²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.India

Email: ssk596259@gmail.com

² Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P.India

सार - कबीर मुक्त विचारक थे। उन्होंने अपनी आजादी का इस्तेमाल अपने जीवन के आखिरी घूंट तक किया। कबीर ने अपनी रचना में जहाँ 'सती' प्रथा का विरोध किया। फिर भी उन्हें महिलाओं के लिए कोई सम्मान नहीं था। कबीर ने हर जगह झूठी कृत्रिमता के प्रति अपनी अस्वीकृति व्यक्त की। वे जीवन की वास्तविकता को उच्च मूल्य देते थे। निर्धारित कर्तव्य करना और जीवन में सही मार्ग का पालन करना ही कबीर का एकमात्र उद्देश्य था। जो मनुष्य सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य और बनावटीपन के जाल में फंस जाता है, वह जीवन में कभी भी इच्छित सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। कबीर का महत्व हर जगह महसूस किया गया। आज भी लोग अमल करने को तैयार हैं। कबीर के आदर्शों और सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में उतारें। उनका सत्य का आदर्श इसका मुख्य कारण है। कबीर के सिद्धांत हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की कोई असफलता हमें नहीं मिलेगी। वह बेबसी से उन लोगों को देख रहा था जो सत्य के मार्ग के बारे में सोचे बिना झूठ के रास्ते पर चल रहे थे। यह मानव की प्रगति में बाधक था।

कीवर्ड: कबीर दास, भूमिका, सामाजिक-सांस्कृतिक, आदर्शों और सिद्धांत।

-----X-----

1. परिचय

संत कबीर दास जी भक्ति और सूफी आंदोलन के मध्यकालीन भारतीय संतों में से एक हैं। भक्ति आंदोलन हिंदू संतों द्वारा शुरू किया गया था जबकि सूफी रहस्यवाद मध्यकालीन भारत (1200-1700) में मुस्लिम संतों द्वारा शुरू किया गया था। कबीर दास जी ने भक्ति आंदोलन में बहुत योगदान दिया और उन्हें रविदास, फरीद और नामदेव के साथ भक्ति का अग्रणी माना जाता है। दुख के मार्ग के रूप में प्रेम की उनकी अवधारणा संभवतः सूफियों के लिए कुछ हद तक ऋण का संकेत दे सकती है। नाथ परंपरा, भक्ति और सूफीवाद के इन और अन्य तत्वों, कबीर दास जी ने अपने स्वयं के रहस्यमय स्वभाव के साथ मिलकर संश्लेषण किया जो कबीर दास जी का विशिष्ट धर्म है।

कबीर दास जी भारत के प्रमुख आध्यात्मिक संतों में से एक थे जो भारत के उत्तरी भाग में बनारस के पवित्र शहर में रहते थे। वह अपने गूढ़ दोहों और गीतों के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध हैं जो जीवन और आध्यात्मिकता को सरल

लेकिन शक्तिशाली तरीके से जोड़ते हैं। उनकी प्रतिभा इस बात में रही है कि उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कवियों और आम जनता को प्रेरित किया है। उनके शब्द एक सार्वभौमिक भाषा में थे, जो शाब्दिक और आलंकारिक रूप से, परमात्मा का अनुभव करने के लिए बाधाओं को तोड़ते थे। वास्तव में, उनके जीवन की बुनियादी जानकारी भी - उदाहरण के लिए, उनका जन्म कब हुआ, उनके माता-पिता कौन थे, उनका पारिवारिक जीवन कैसा था, और जब उनकी मृत्यु हुई - रहस्य में डूबा हुआ है।[1]

किंवदंतियों के अनुसार, उनका जन्म 1398 ईस्वी में हुआ था। कहा जाता है कि बनारस के एक तालाब में एक मुस्लिम बुनकर को कमल के पत्ते पर तैरते हुए पाया गया था। बुनकर ने बच्चे को अपने अधीन कर लिया और पारंपरिक तरीके से उसे 'कबीर' नाम दिया, जिसका अर्थ है 'महान'। कबीर दास जी ने छोटी सी उम्र में ही अपार आध्यात्मिक प्रतिभा का परिचय दिया था। परंपरा हमें बताती है कि स्वामी रामानंद उनके गुरु (एक शिक्षक) थे।

उनके लेखन में बीजक, अनुराग सागर, सखी ग्रंथ, कबीर बानी और कबीर ग्रंथवाली शामिल हैं। कबीर पंथ संप्रदाय की सबसे पवित्र पुस्तक बीजक है। बीजक अपने पाठकों से सत्य के प्रत्यक्ष अनुभव के पक्ष में अपने भ्रम, ढोंग और रूढ़िवादिता को त्यागने की अपील करता है। यह पाखंड, लालच और हिंसा पर व्यंग्य करता है, खासकर धार्मिक लोगों के बीच। बीजक में तीन मुख्य खंड शामिल हैं (जिन्हें रमैनी, शब्द और साखी कहा जाता है) और चौथा खंड जिसमें विविध लोकगीत शामिल हैं। कबीर दास जी की अधिकांश सामग्री को शब्द के रूप में जाने वाले गीत के रूप में और कामोद्दीपक दो-पंक्ति साखी (या दोहा) के माध्यम से लोकप्रिय बनाया गया है जो पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय ज्ञान के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करता है। अनुराग सागर में धर्मदास को सृष्टि की कहानी सुनाई जाती है। [2]

'कबीर दास जी द ग्रेट मिस्टिक' नामक लोकप्रिय पुस्तक में लेखक इस्साक ईजेकील कहते हैं,

"कबीर दास जी के गीतों को किसी की स्वीकृति नहीं मिलती। वे कोई स्वीकृति नहीं मांगते हैं, कोई अनुमोदन नहीं मांगते हैं, कोई लोकप्रियता नहीं खोजते हैं, कोई प्रशंसा नहीं मांगते हैं, और कोई प्रशंसा नहीं चाहते हैं। वे इन विचारों से स्वतंत्र हैं और वे एक संत द्वारा रचित अब तक का सबसे निर्लिप्त साहित्य, मुक्त लेखन का सबसे मुक्त साहित्य है।"

कबीर दास जी पाखंड के सख्त खिलाफ थे और लोगों को दोहरा मापदंड बनाए रखना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने हमेशा लोगों को अन्य जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होने और सच्चे प्रेम का अभ्यास करने का उपदेश दिया। उन्होंने अच्छे लोगों की संगति की आवश्यकता का आग्रह किया जो मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करते हैं उन्होंने न्यूनतम जीवन के विचार का समर्थन किया जिसकी सूफियों द्वारा वकालत की गई थी। कबीर दास जी की कविता जीवन के बारे में उनके दर्शन का प्रतिबिंब है। उनका लेखन मुख्य रूप से पुनर्जन्म और कर्म की अवधारणा पर आधारित था। जीवन के बारे में कबीर दास जी का दर्शन बहुत स्पष्ट था। वह बहुत ही सरल तरीके से जीवन जीने में विश्वास करते थे। उन्होंने अपने लेखन में अपने मूल्यों और विश्वासों को बहुत खूबसूरती से व्यक्त किया है जिसमें दोहा, कविताएं, रमैनी, कहारवास और शब्द शामिल हैं। [3]

1.1 कबीर दास की जीवनी

भारत के एक रहस्यमय कवि और महान संत दास कबीर दास का जन्म 1440 में हुआ था और उनकी मृत्यु 1518 में हुई थी। इस्लाम के अनुसार कबीर का अर्थ बहुत बड़ा और महान है। कबीर पंथ एक विशाल धार्मिक समुदाय है जो कबीर को संत मत संप्रदायों के प्रवर्तक के रूप में पहचानता है। कबीर पंथ के सदस्यों को कबीर पंथी के रूप में जाना जाता है जिन्होंने पूरे उत्तर और मध्य भारत में विस्तार किया था। बीजक, कबीर ग्रन्थावली, अनुराग सागर, सखी ग्रन्थ आदि कबीर दास के कुछ महान लेखन हैं। यह स्पष्ट रूप से उनके जन्म के बारे में ज्ञात नहीं है, लेकिन यह ध्यान दिया जाता है कि उनका पालन-पोषण एक बहुत ही गरीब मुस्लिम बुनकर परिवार द्वारा किया गया था। वह बहुत आध्यात्मिक थे और एक महान साधु बने। उन्होंने अपनी प्रभावशाली परंपराओं और संस्कृति के कारण पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बचपन में अपने गुरु रामानंद से सभी आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किए थे। एक दिन, वह गुरु रामानंद के एक प्रसिद्ध शिष्य बन गए। कबीर दास के घर को छात्रों और विद्वानों के रहने और उनके महान कार्यों के अध्ययन के लिए समायोजित किया गया है। [4]

कबीर दास के जन्म के माता-पिता का कोई सुराग नहीं है क्योंकि उनकी स्थापना नीरू और नीमा (उनके देखभाल करने वाले माता-पिता) द्वारा वाराणसी के एक छोटे से शहर लहरतारा में की गई थी। उसके माता-पिता बेहद गरीब और अशिक्षित थे, लेकिन उन्होंने दिल से छोटे बच्चे को गोद लिया और उसे अपने व्यवसाय के बारे में प्रशिक्षित किया। उन्होंने एक साधारण गृहस्थ और एक फकीर का संतुलित जीवन व्यतीत किया।

2. कबीर दास शिक्षा

ऐसा माना जाता है कि उन्होंने संत कबीर के गुरु रामानंद से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की थी। प्रारंभ में रामानंद कबीर दास को अपना शिष्य मानने को तैयार नहीं थे। एक बार की बात है संत कबीर दास तालाब की सीढ़ियों पर लेटे हुए राम-राम का जाप कर रहे थे, प्रातःकाल रामानंद स्नान करने जा रहे थे कि कबीर उनके चरणों के नीचे आ गए। रामानंद ने उस गतिविधि के लिए दोषी महसूस किया और कबीर दास जी ने उन्हें अपने छात्र के रूप में स्वीकार करने का आग्रह किया। ऐसा माना जाता

है कि कबीर का परिवार आज भी वाराणसी के कबीर चौरा में रहता है। [5]

• कबीर मठ

कबीर मठ कबीर चौरा में पाया जा सकता है, जो वाराणसी में स्थित है, साथ ही लहरतारा में पिछला मार्ग, जो वाराणसी में भी है। यहां संत निरन्तर कबीर के दोहे गा रहे हैं। यह एक सेटिंग है जिसमें व्यक्तियों को वास्तविक जीवन से संबंधित मामलों में निर्देश दिया जा सकता है। उनकी माता नीरू और उनके पिता नीरू दोनों ही नीरू टीला को अपना घर कहते थे। तब से, यह कबीर के लेखन की जांच कर रहे छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक घर में तब्दील हो गया है।

• दर्शन

संत कबीर उस समय की मौजूदा धार्मिक मनोदशा से प्रभावित थे जैसे हिंदू धर्म, तंत्रवाद, साथ ही व्यक्तिगत भक्ति, इस्लाम के छविहीन भगवान के साथ मिश्रित थी। कबीर दास पहले भारतीय संत हैं जिन्होंने एक सार्वभौमिक मार्ग देकर हिंदू धर्म और इस्लाम का समन्वय किया है जिसका अनुसरण हिंदू और मुसलमान दोनों कर सकते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक जीवन का संबंध दो आध्यात्मिक सिद्धांतों (जीवात्मा और परमात्मा) से होता है। मोक्ष के बारे में उनका विचार था कि यह इन दो दिव्य सिद्धांतों को जोड़ने की प्रक्रिया है।

उनके महान कार्य बीजक में कविताओं का एक विशाल संग्रह है जो कबीर के आध्यात्मिकता के सामान्य दृष्टिकोण को दर्शाता है। कबीर की हिंदी एक बोली थी, उनके दर्शन की तरह सरल। उन्होंने बस ईश्वर में एकता का पालन किया। उन्होंने हिंदू धर्म में मूर्तिपूजन को हमेशा खारिज किया है और भक्ति और सूफी विचारों में स्पष्ट विश्वास दिखाया है। [6]

• उनकी शायरी

उन्होंने एक ऐसी शैली में कविताएँ लिखीं जो एक अनुभवी तथ्यात्मक गुरु की प्रशंसा से गूंजती हुई संक्षिप्त और सीधी थी। इस तथ्य के बावजूद कि वे पढ़ या लिख नहीं सकते थे, उन्होंने अवधी, ब्रज और भोजपुरी जैसी अन्य भाषाओं के तत्वों को शामिल करते हुए अपनी कविताओं की रचना हिंदी में की। इस तथ्य के बावजूद कि बड़ी संख्या में लोगों ने उनका उपहास किया, उन्होंने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि दूसरों को क्या कहना है।

• विरासत

संत कबीर को श्रेय दी जाने वाली सभी कविताएँ और गीत कई भाषाओं में मौजूद हैं। कबीर और उनके अनुयायियों का नाम उनकी काव्यात्मक प्रतिक्रिया जैसे बानी और उच्चारण के अनुसार रखा गया है। कविताओं को दोहे, श्लोक और साखी कहा जाता है। साखी का अर्थ है याद किया जाना और उच्चतम सत्य को याद दिलाना। इन कथनों को याद करना, प्रदर्शन करना और उन पर विचार करना कबीर और उनके सभी अनुयायियों के लिए आध्यात्मिक जागृति का मार्ग है। [7]

3. कबीर दास का धर्म

कबीर दास के अनुसार, वास्तविक धर्म जीवन का वह तरीका है जिसे लोग जीते हैं, न कि लोगों द्वारा स्वयं बनाया गया। उनके अनुसार कर्म ही पूजा है और उत्तरदायित्व धर्म के समान है। उन्होंने कहा कि अपना जीवन जियो, अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करो, और अपने जीवन को शाश्वत बनाने के लिए कड़ी मेहनत करो। सन्यास लेने जैसी जीवन की जिम्मेदारियों से कभी पीछे न हटें। उन्होंने पारिवारिक जीवन की सराहना की और उसे महत्व दिया जो कि जीवन का वास्तविक अर्थ है। वेदों में भी उल्लेख है कि घर और जिम्मेदारियों को छोड़कर जीवन जीना वास्तविक धर्म नहीं है। एक गृहस्थ के रूप में रहना भी एक महान और वास्तविक सन्यास है। जैसे गृहस्थ जीवन जीने वाले निर्गुण साधु अपनी रोजी-रोटी के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं साथ ही भगवान का नाम जपते हैं।

उन्होंने लोगों को एक प्रामाणिक तथ्य दिया है कि मनुष्य का धर्म क्या होना चाहिए। उनके इस तरह के उपदेशों ने आम लोगों को जीवन के रहस्य को बड़ी आसानी से समझने में मदद की है। [8]

3.1 हिन्दू या मुसलमान, कबीर दास

ऐसा माना जाता है कि जब कबीर दास का निधन हुआ, तो हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने दावा किया कि उन्होंने उनकी लाश खोज ली है। ये दावे कबीर दास के गुजर जाने के बाद किए गए थे। ये दोनों अपने-अपने समुदायों की परंपराओं के अनुसार कबीर दास की लाश की विदाई की रस्में निभाना चाहते हैं। क्योंकि वह हिंदू धर्म का सदस्य था, हिंदुओं ने कहा कि वे लाश को जलाकर नष्ट करना चाहते थे, जबकि मुसलमानों ने कहा कि वे उसे

इस्लामी रीति-रिवाजों के अनुसार दफनाना चाहते थे क्योंकि वह एक मुसलमान था।

हालाँकि, शरीर को ढकने वाली चादर को हटाने के बाद, उन्होंने पाया कि उसकी जगह कुछ ही फूल थे। उन्होंने अपनी-अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम समारोहों को अंजाम दिया, जिसमें एक दूसरे के बीच फूलों का आदान-प्रदान शामिल था। यह भी कहा जाता है कि जब वे लड़ रहे थे, कबीर दास का भूत उन्हें दिखाई दिया और कहा, "मैं न तो हिंदू था और न ही मुसलमान। मैंने दोनों अवस्थाओं का अनुभव किया है; साथ ही, मैं कुछ भी नहीं और सब कुछ था, और मैं सक्षम हूँ दोनों में ईश्वर को देखने के लिए। मुस्लिम या हिंदू जैसी कोई चीज नहीं है। इनमें से किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं है। हिंदू और इस्लाम दोनों एक ही व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखे जाते हैं, जो आसक्तियों से मुक्त है। आवरण हटाओ, और आप अपने लिए चमत्कार देखेंगे! [9]

4. कबीर दास के भगवान

एक गुरु-मंत्र के रूप में, उनके गुरु रामानंद ने उन्हें भगवान राम का नाम दिया, जिसकी व्याख्या करने के लिए वे स्वतंत्र थे, जैसा कि उन्होंने उचित समझा। वह निर्गुण भक्ति के लिए प्रतिबद्ध था न कि अपने गुरु की तरह सगुण भक्ति के लिए। जैसा कि उनके कथन से पता चलता है, "दशरथ के घर न जनमे, ये चल माया कीन्हा," उनके राम न तो दशरथ के पुत्र थे और न ही अयोध्या के सम्राट। इसके बजाय, राम एक परम शुद्ध सच्चिदानंद थे। बुद्ध और सिद्धों की शिक्षाओं का उनके द्वारा पालन की जाने वाली इस्लामी परंपरा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। उनके अनुसार, "निर्गुण नाम जपहु रे भैया, आवाज़ की गति लाखी न जय।"

उन्होंने कभी भी अल्लाह और राम के बीच अंतर नहीं किया, बल्कि लगातार लोगों को यह उपदेश देते रहे कि ये एक ही ईश्वर के अलग-अलग नाम हैं। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को, चाहे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा या जाति कुछ भी हो, एक ऐसे धर्म का पालन करना चाहिए जो एक दूसरे के लिए प्रेम और भाईचारे पर आधारित हो। अपने आप को पूरी तरह से उस ईश्वर को सौंप दें जो किसी एक धर्म या जाति से बंधा हुआ नहीं है। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जो कर्म के नियम में अपने विश्वास से कभी नहीं डगमगाए। [10]

5. कबीर दास: एक रहस्यवादी कवि

कबीर दास, एक महान रहस्यवादी कवि, को भारत से बाहर आने वाले सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक कवियों में से एक माना जाता है। उन्होंने इस उम्मीद में दुनिया को अपने गहन दर्शन दिए हैं कि वे लोगों के जीवन में सुधार करेंगे। अच्छा करने के प्रति लोगों का दृष्टिकोण उनके दर्शन के परिणामस्वरूप बदल गया है, जो सच्चे धर्म के रूप में ईश्वर और कर्म की एकता पर जोर देता है। ईश्वर के प्रति उनका प्रेम और समर्पण भक्ति की हिंदू प्रथा के साथ-साथ इस्लामी सूफी परंपरा की याद दिलाता है। [11]

ऐसा माना जाता है कि वह हिंदू ब्राह्मणों के परिवार से आते थे, लेकिन उनकी आर्थिक सहायता नीरू और निम्मा नाम के दो मुस्लिम जुलाहों से हुई, जो निःसंतान थे। लहरतारा में, उन्होंने उसे एक तालाब में रख दिया जो एक विशाल कमल के पते के ऊपर स्थित था। क्योंकि उस समय हिंदू धर्म और इस्लाम की रूढ़िवादी मान्यताओं का पालन करने वालों के बीच बहुत विवाद था, कबीर दास का प्राथमिक लक्ष्य अपने दोहों या दोहों के माध्यम से इस समस्या का समाधान खोजना था।

अपने कार्यक्षेत्र में वे कभी स्कूल नहीं गए, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर वे अत्यंत ज्ञानी और आध्यात्मिक व्यक्ति थे। उनके दोहे और दोहे औपचारिक भाषा में लिखे गए थे जो उस समय व्यापक रूप से बोली जाती थी, जिसमें ब्रज, अवधी और भोजपुरी शामिल थे। उन्होंने बड़ी संख्या में दोहों की किताबें लिखीं, साथ ही सामाजिक मानदंडों के आधार पर कहानियाँ और दोहे भी लिखे। [12]

6. कबीर दास की रचनाएँ

कबीर दास द्वारा लिखी गई पुस्तकें आम तौर पर दोहों और गीतों का संग्रह हैं। कुल कार्य बहतर हैं जिनमें कुछ महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कार्य रेख्तास, कबीर बीजक, सुक्निधान, मंगल, वसंत, सबदास, सखियाँ और पवित्र आगम हैं।

कबीर दास की लेखन शैली और भाषा बहुत ही सरल और सुंदर है। उन्होंने अपने दोहों को बहुत ही साहस और स्वाभाविक रूप से लिखा था जो अर्थ और महत्व से भरे हुए हैं। उन्होंने अपने दिल की गहराई से लिखा। उन्होंने अपने सरल दोहों और दोहों में समस्त विश्व के भाव को संकुचित कर दिया है। उनकी बातें तुलना और प्रेरणा से परे हैं। [13]

7. धर्म-भेद

भारतीय धर्म निस्संदेह एक मजबूत आधार है। इसके घटक भाग एक ओर सामाजिक मनोविज्ञान और सामाजिक जीवन में रुचि रखते थे, और इसने दूसरी ओर विचार और भावना की स्वतंत्रता के द्वार खोल दिए। हालाँकि, क्योंकि इसने स्थापित धार्मिक प्रथाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया, यह अंधविश्वासों और अंधविश्वासों में फंस गया, और इसका इस्तेमाल स्वतंत्रता के बजाय दासता के लिए किया जाने लगा। इसलिए धर्म को कई रूपों में देखा जा सकता है, हालाँकि कई रास्ते अपनाने के बावजूद इसमें अभी भी खामियाँ हैं। यही दोष समाज के टूटने का प्राथमिक कारण था। [14]

कबीर के समय सामाजिक जीवन को तहस-नहस कर देने वाली खामियों में से एक दोष रूढ़िवाद था। वे सामान्य रूप से दैनिक जीवन को बाधित कर रहे थे। जब बौद्ध धर्म और जैन धर्म को अलग-अलग संस्थाओं में विकसित होने की आवश्यकता महसूस हुई, तो आर्य धर्म में पतन के लक्षण दिखाई देने लगे। हालाँकि, इस्लाम के आगमन ने धर्म की वास्तविक संरचना को बदल दिया। राष्ट्र पर मोहम्मदों का शासन था। उन्होंने "काफिरों" की प्रथाओं को नष्ट करते हुए अपने धर्म का प्रचार किया। संवेदनहीन हत्या और भीषण नरसंहार के मामले में, मुसलमानों ने "हूणों" को पीछे छोड़ दिया।

कबीर ने हिंदू धर्म में घुस आए बेतुके व्यवहारों और मिथ्या अभिमान की कड़ी आलोचना की, लेकिन उन्होंने हिंदू धर्म के मर्म पर उतना गंभीर प्रहार नहीं किया जितना उन्होंने "तुर्की धर्म" पर किया। [15]

"तुर्की धर्म बहुत हमें खोजा,
बहुत जागर करैया ए बोधा।
गफिला गरब करै अधिकारै,
स्वारथ आरती बधाई एक गई।"

8. निष्कर्ष

कबीर के काल में सामाजिक जीवन की आर्थिक संरचना बहुत जटिल थी। देश में धन की कोई कमी नहीं थी। कबीर की क्रांतिकारी प्रवृत्ति थी जो उनके विचारों और कविताओं में दिखाई देती है। उनके पास एक साहसी भावना भी थी। उन्होंने हिंदू या मुस्लिम समाज की बहुत कम परवाह की। देश की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति काफी भिन्न थी। कबीर एक नए रास्ते पर चलना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने

हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों में दोष पाया। हिंदू और मुसलमान दोनों ने जो रास्ता अपनाया वह झूठा और बनावटी था। जीवन की वास्तविकता वहाँ अनुपस्थित थी। इसलिए कबीर ने एक नया तरीका अपनाने की कोशिश की जो दोनों समुदायों के लिए उपयोगी और मददगार साबित हो। कबीर लोगों को अपने रास्ते पर चलने के लिए दबाव डालना पसंद नहीं करते थे, लेकिन वे चाहते थे कि लोग उस रास्ते पर चलें जो उनके अनुसार उपयोगी हो। उनका सिद्धांत आसान और व्यावहारिक था।

संदर्भ:

1. अकबराबादी, सईद। (2017) इस्लामिक हिस्ट्री: द राइज एंड फॉल ऑफ मुस्लिम्स, एडमस पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स। नई दिल्ली। पृष्ठ 20।
2. अशरफ, के.एम., (2000) लाइफ एंड कंडीशन ऑफ द पीपुल ऑफ हिंदुस्थान, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली। 2015, कराची में पहली बार प्रकाशित, पी। 37
3. अहमद, अजीज। (2000) एपिक एंड काउंटर एपिक इन मेडिवल इंडिया, रिचर्ड एम. ईटन द्वारा संपादित, इंडियाज़ इस्लामिक ट्रेडिशनस 711-1750, ओयूपी, नई दिल्ली।
4. एंजल, लियोनार्ड (2003) एनलाइटनमेंट ईस्ट एंड वेस्ट। दिल्ली प्रकाशन।
5. अलीमर्दी मोहम्मद मेहदी, (2004) इस्लाम और सिख धर्म में ईश्वर की अवधारणा, दर्शनशास्त्र विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में प्रस्तुत थीसिस।
6. अमीर खुसरो, (2005) नूह सिपिहर, वाहिद मिर्जा द्वारा संपादित, कलकत्ता।
7. बनर्जी, जामिनी मोहन, (2006) फिरोजशाह तुगलक का इतिहास, मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, पृ. 181
8. बहुगुणा रामेश्वर प्रसाद, (2005) मध्यकालीन उत्तर भारतीय भक्ति में संघर्ष और आत्मसात: एक वैकल्पिक दृष्टिकोण, सैप (यूजीसी) कार्यक्रम, इतिहास और संस्कृति विभाग जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

9. बर्थवाल पी.डी., (2006) द निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोएट्री, पहला संस्करण, 1936, पुनर्मुद्रण, दिल्ली।
10. बैसे, माया। (2007) मिस्टिक्स एंड मेन ऑफ मिरिकल इन इंडिया। नई दिल्ली हेरिटेज पब्लिशर्स।
11. बर्नहार्ट, क्लेरेंस एल. और विलियम डी. हैल्सी। एड। (2003) द न्यू सेंचुरी हैंडबुक ऑफ इंग्लिश लिटरेचर। न्यूयॉर्क: एपलटन-सेंचुरीक्रॉफ्ट्स, इंक।
12. बर्थवाल, पी.ओ. (2007) ट्रेडिशनस ऑफ इंडियन मिस्टिसिज्म बेस्ड ऑन निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदू पोएट्री। नई दिल्ली: हेरिटेज पब्लिशर्स।
13. बिजली, एस.एम. (2008) रहस्यवाद। दिल्ली: इंदराह-ए-अदबियत-ए दिल्ली।
14. बनर्जी, जैमिनी मोहन, (2009) फिरोजशाह तुगलक का इतिहास, मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली। पी। 181
15. बोध सागर (2005): संपादित, स्वामी युगलानंद, वैकटेश्वर प्रेस, मुंबई।

Corresponding Author

Sandeep Prajapati*

Research Scholar, Shri Krishna University,
Chhatarpur, M.P.India

Email: ssk596259@gmail.com